.. बाप समझाते है कि हम बच्चों के बीच में आ [illegible] हुए है। तुम भी जानते हो कि बेहद का बाप जो सदैव परमधाम मे रहते है। वो अब आये है। सतयुग, त्रेता मे तो उनको कोई याद नही करते। बाप तुमसे पूछते है कि तुम वहां याद करते हो? बच्चे कहेंगे वहां पर तो सुख ही सुख है। इसलिये याद करने की दरकार ही नही रहती है। अभी तो है ही रावण राज्य। दुःख धाम। अभी तुम बच्चे समझते हो कि हम बाप के सम्मुख बैठे है। वो ऊंच ते ऊंच भगवान सबका बाप है। सबको सुख देने वाला है। वो ऊंच ते ऊंच भगवान है। वो ही बेहद का ऊंच ते ऊंच सुख देते है। तुम जानते हो हम यहां आये है बेहद के बाप से स्वर्ग की बादशाही का वर्सा लेने। कोई समझ नही आता है तो बाप से पूछ सकते है। सब बच्चों को हक है। ऐसे नही कि ब्राह्मणी के बिना बाप से मिल नही सकते है। वा ब्राह्मणी को दिखाये बिना पत्र नहीं लिख सकते। नही। तुम सब बच्चे हो ना। कोई भी चाहे तो डायरेक्ट पत्र लिख सकते है। और मंगवा भी सकते है। इससे डरना नही है। तुम भी बच्चे हो वो (ब्राह्मणी) भी बच्चे है। फर्क नही है। हां वो सिर्फ निमित्त बनती है तुमको मुरली सुनाने के। जब तक कि तुम मुरली खुद नही पढ़ सकते हो। बाकी कोई बात पूछनी है तो पूछ सकते है। नही तो तुम भी मुरली पढ सकते हो। ऐसे थोड़ेई की कोई ब्राह्मणी की बात सुनकर सुनावेंगे तो बाबा उनको गुस्सा करेंगे। यह तो अच्छा ही है। सुनाने से उनको शिक्षा सावधानी मिलेगी। बाबा सब सेन्टर्स के बच्चों को कहते है कि किसको भी पत्र लिखना है, समाचार देना है, तो आपस में भाई-बहनों को मिलना चाहिये। ऐसे नही कि एक की बात को बाबा मानेंगे, नही कमेटी चाहिये। उनको देख भाल करनी है कि बाबा की सर्विस चलती है। कोई ब्राह्मणी विघ्न डालने वाली तो नही है। कोई से नाराज तो नही होती? कोई बे कायदे ध्यान आदि में तो नहीं जाती है? बाबा को समाचार देना चाहिये। बाबा यह सब क्या है। ध्यान में डांस आदि करती है। हमको समझमें नही आता है। ऐसे बहुत कहते है के हमारे में बाबा आते है। मम्मा आती है। अब यह तो तुम जानते हो बेहद के बाप की मुरली तो आती रहती है। उनसे बड़ा तो कोई है नही। तुम्हारा कनेक्शन ही बाप से है। वर्सा भी उन्ही से लेते हो। बाकी सब है लेने वाले। दाता एक ही है। तुम्हारा उन्ही से कनेक्शन होना चाहिये। मम्मा आई तो क्या हुआ। केवल दो एक पुआइन्टस देकर चली जायेगी। बाकी कोई भी देह धारी से हमारा लव नही है। हमको तो याद एक को ही करना है। बाकी हां नम्बर वार पुरुषार्थ अनुसार लव भी रखना पड़ता है। बड़ी ब्राह्मणी को छोटी ब्राह्मणी मंगवाती है कि आकर भाषण करे। समझते है कि वो महारथी है। दिल में रिगार्ड रखना है। तुम जानते हो कि नम्बरवार किनका रिगार्ड रखना है। दुनियां में कोई भी नही है जिनको पता हो कि सारे ड्रामा के अनुसार सबसे ऊंच ते ऊंच कौन है। किनका ऊंच ते ऊंच पार्ट है। सो तुम ही जानते हो। यह भी बाप ने समझाया है कि यह है आसुरी सम्प्रदाय। अकासुर, बकासुर, कंस, [illegible] बाप ने ही समझाया होगा कि उनके कितने गन्दे काम है। इसलिये ही यह असुर नाम पड़ा है। [illegible] मनुष्य ही की है। जैसी होती है। बाकी फीचर्स की [illegible] है। कोई तो गोरे कोई काले होते है। तुम [illegible] को बिलकुल फरीडम है। सिर्फ ब्राह्मणी को [illegible] बाबा से बात करनी है। टाईम लेकर दो। बाबा टाईम जरुर देंगे। यह अविनाशी सर्जन है ना। ना सुनाने से रोग रह जाता है। [illegible] वास नही है। बच्चे जानते है कि ऊंच ते ऊंच बाप हमको पढ़ा रहे है। आजकल तो कुत्ते बिल्ले [illegible] भी भगवान कह देते है। कुत्ते बिल्ले को भी बहुत सजाते है। उनके कानो नाक मे छेद करते है। उनको पालते है। गन्द बहुत है। यह तो तुम्ही समझते हो कि कितनी गन्दी सृष्टी है। इसको ही रौरव नर्क कहा जाता है। [illegible] गरुड पुराण आदि पढ़ते है परन्तु समझते कुछ भी नही है। बाबा खुद सब [illegible] पढ़ते थे। अब समझते है कि वो सब है भक्ति मार्ग। भगवान आते है तो भक्ति खलास हो [illegible] स्वर्ग में भक्ति होती नही है। जब भक्ति है तो [illegible] होता। कई बच्चे समझते है कि [illegible]

मे भी यह ज्ञान चलता है। परन्तु नही। वहां तो ज्ञान की प्रारब्ध मिलती है।तुम अभी पढ़ रहे हो। हमको ऊंच ते ऊंच वाप पढ़ाते है तो उस खुशी मे तुम्होर रोमाचं खडे हो जाने चाहिये। वो खुशी स्थाई रहनी चाहिये। वाप से वर्सा वाप से वर्सा लेने लिये पढ़ना भी तो जरुर है।एक अक्षर से ही खुशी का पारा चढ जाता है। यहां तुम आते हो वादल के रुप मे रिफ्रेश होने।वावा कहते है कि वादलोको ही ले आओ जो कि फिर धारन कर वेषा वरसावे।इस ज्ञान वर्सा से तुम सृष्टी को आधा कल्प के लिये सब्ज बना देते हो। खास भारत और सोर विश्व को तुम कितना शुध वनाते हो। सौर विश्व पर शान्ति सुख सम्पति स्थापन कर रहे हो। यहलिख सकते हो हम 9र्वे ष मे पवित्रता सुख शान्ति सम्पन्न देवी स्वराज्य की स्थापना वां सतयुग मनुष्य कोई यह समझते थोडेई है कि हम नेकवासी वन्दर है।पत्थर वुधी है। अभी तुम समझते हो कि हम पत्थर वुधी थे। कुछ भी पता नही था। आसुरी वुधी थी। भल कितना भी वडा आदमी गर्वनर हो यहां आने पर वो समझ जोवगा कि हम तो ईडियट है। ऐक्टर होकर और स्वता और ड्रामा की आद मध्य को नही जानते हो। नाटक मे कोई भी ऐक्टर से दुसरे ऐक्टर की भी ऐक्ट पूछो तो झट वता देगें।इस वेहद के नाटक का किसको भी पता नही है।पूछो ऊंच ते ऊंच भगवान का पॉट क्या है तो कह देगें कि वो तो सेवव्यापी है। कण-2 मे है। वाप सिध्द करके वताते है कि विलकुल ही 100% इडियट है। सवेस ऊंच स्ते ऊँच है वाप। फिर ओव नीचे तो ब्र, वि, शं। तुम ऊंच ते ऊँच वाप फिर ब्र, वि, शं आद सवको जानते हो। तो वो नशा रहना चाहिये नां। दुनियां में तो नांपरमात्मा को नां ब्र, वि, शं को नां ही ल-न को नां ही जगतअम्वा को जानते है। वस मां वैस ही जाकर नमस्कार किया। प्रर्थिना की। वस। जानते कुछ भी नही। अभी तुम समझते हो कि हम कितेन तुच्छ वुधी थे। अव हम क्या वन रहे है। कौन वताते है? वाप। वाप होवे तो ऐसा होवे। ल-न को भी ऐसा वनाने वाला तो वाप ही है नां। सवकी दिल होती है कि कृष्णपुरी मे जावे। कृष्ण को भक्ति मार्ग मे झुलाते है।परन्तु समझते थोडेई है कि कोकव आया था। फिर कवओलगा हम झुलाते क्यो है? कृष्ण आद सवेस मीठा तो हैशिव वावा। कृष्ण को भी दुध पिलाते है तो शिव वावा को भी दुध पिलाते है। परन्तु उनमे भी प्यारा कौन? शिव वावा। क्योकि कृष्ण को भल तो ऐसा गौरा वनाने व वाला तो शिव वावा ही है नां। हमको भी विश्व का मालिक वनाने वाला वाप है। तो लिख सकते है कि 9र्वेष के अन्दर हम=भारत पर पवित्रता सुख शान्ति वना कर ही छोडेंगें। सो भी श्रीमत पर। लिखने मे कोई ...ा नही है। मनुष्य तो विलकुल ही वेसमझ ऐप वुधी है। भले फिरकोई जज है वैरिस्टर है।परन्तु हमारा जो नालेज है वो तो उनमे नही है नां। इतना नशा चढ़ता है नां। नालेज कोई कम नही है। मनुष्यों को तो यह पता ही नही है कि कैसे शिव वावा आकर पढ़ाते है। आते है तो कहते है कि मै तुमको ले जाने वाला गुरु भी हूं नां। ऐसे नहीं कि तुमको कोई मनुष्य पढ़ाते है। "ज्ञ वाप जो ज्ञान का सागर है उसने यह रथ लिया है। यह है भाग्यशाली रथ। मनुष्य का ही रथ है। मनुष्य की ही चैचा है। जनावर की कोई वात ही नही। पहले-2 मनुर्ष्यो की वात को तो समझो जनावरो की वात मे जाने से क्या फायदा! यह भी तुम वच्चे जानते हो कि सतयुग मे तुम्होर लिये कितना फस्ट क्लास फर्नीचर होगा। सव चीजे सुन्दर होगी। खेती वाडी सभी सुन्दर। यहां पर भल कहते है कि अनाज वहुत पैदा करेंगें। यह करें वो करेंगें। मकर नेचरल कैलेमिटीज से तो कोई सामना नही कर सकता है नां।यह तो होना ही है। विनाश भी जरुर होना ही है। तुम जानते हो कि यह विनाश वहुत कल्याण कारी है।हम 9र्वेष के अन्दर सारी दुनियां पर शान्तिः स्थापन कर रहे है। श्री मत पर। ऊंच ते ऊंच है ही भगवान उनकी ही श्रीमत गाई हुई है। कव भी किसी वात मे मूंझो तो झट वावा को लिख कर पूछ सकते हो कि वावा इस वात मे आप हमको डायेक्शन वां श्रीमत दो। वावा झट लिख देगें।मूल वात ही है मनमनाभव। उसमे तो मूंझने की दरकार ही नही।...वाकी दुनियां की रस्म रिवाज जो है उनमे तोड निभाना है।इस वात मे क्या करें, किनका खावें, ...का नही खावें सव डायेक्शनस ले सकते हो। अन्दर मे वडी खुशी रहनी चाहिये कि हम वडे वावा का